ॐ श्रीगणेशाय नमः

नवोदय आन्दोलन

आव्हान पत्र

(Manifesto of The Indian Renaissance Movement)

अनिल चावला
भोपाल,
भारत

E-mail anil@samarthbharat.com
hindustanstudies@rediffmail.com

Published at www.samarthbharat.com

© All Rights Free
© सर्वाधिकार पूर्णतः मुक्त

प्राक्कथन

महात्मा गाँधी का आर्दशवाद, शंकर–जयकिशन और नौशाद का रूमानी संगीत, मधुबाला–किशोर के गुदगुदाते प्रेम प्रसंग, शम्मी कपूर का उत्सवी याहू, अमिताभ बच्चन का एंग्री यंग मैन – स्वतंत्रता पश्चात भारतीय मानस विभिन्न पड़ावों से गुजरा है। स्वतंत्रता पूर्व युवा पीढ़ी के समक्ष स्पष्ट लक्ष्य था और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दिशा निर्देश देने के लिए एक आदर्शवादी नेतृत्व भी था। देश आज़ाद हुआ। लक्ष्य पर पहुँच विश्राम करने की इच्छा स्वाभाविक रूप से होती है। स्वतंत्रता पश्चात युवावस्था को प्राप्त करने वाली पीढ़ी ने देश को संभालने का जिम्मा नेताओं और अफसरशाहों को सौंपा और स्वयं या तो रोमांस की मीठी चाशनी के रसास्वादन में डूब गयी या फिर कुछ अन्य मीठे सपनों में खो गयी। इस काल का प्रतिनिधित्व या तो वो फिल्मी गीत करते हैं जिनकी मिठास आज भी सुनने वालों के कानों में मिश्री घोलती है, या फिर जवाहरलाल नेहरू करते हैं जिनको पूरा देश एक देवदूत के रूप में देखता था। जवाहरलाल नेहरू के भाषणों को सुन देशवासी चिंताविहीन हो जाते। भाखडा–नंगल, भिलाई इत्यादि आधुनिक तीर्थ स्थापित करने वाले नेहरू भारत के ही नहीं, पूरे विश्व के नेता थे। वे बच्चों के ही नहीं पूरे देश के चाचा थे जो देश को मीठी–मीठी गोलियाँ खिलाते थे और देश एक स्वप्निल दुनिया में खो जाता था।

इस रूमानियत भरे सुख प्रसंग का अंत १९६२ के चीनी आक्रमण से हुआ। गहरी निद्रा में डूबे व्यक्ति को झकझोर कर उठाने से वह जिस प्रकार हड़बड़ा जाता है, कुछ उसी प्रकार इस देश का मानस अपने स्वप्नलोक से बाहर निकला। हड़बड़ाहट, दिशाहीनता तथा आक्रोश का मिला–जुला भाव। युवा वर्ग को रूमानियत की चाशनी बेमानी लगने लगी। वह गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी और शोषण को देखने और अनुभव करने लगा तथा प्रश्नवाचक निगाहों से नेतृत्व की ओर देखने लगा।

इस विद्रोही भाव का प्रतिनिधित्व एक स्तर पर एंग्री यंग मैन के फिल्मी संस्करण ने किया और दूसरे स्तर पर विभिन्न छात्र एवं युवा आंदोलनों ने किया। आज जब हम ग्रेगोरियन गणनानुसार बीसवीं शताब्दी के अंत की ओर अग्रसर हैं, एंग्री यंग मैन पैसा छापने की मशीन बनने के प्रयास में है और कुछ वर्ष पूर्व का युवा नेता भी साम–दाम–दंड–भेद से कुछ जुगाड़ जमाने की फिराक में घूम रहा है। समस्त मूल्यों को तिरोहित कर आज स्वार्थ को सर्वोच्च जीवनलक्ष्य का दर्जा दिया जा रहा है। गाँधी के आदर्श से जो सरिता प्रारंभ हुई थी वह भ्रष्टाचार के गंदे नाले में बदल गयी है। रूमानी गीतों में नायिका को ईश्वरीय ऊँचाई दी जाती थी, आज नायिका यौनतुष्टि की वस्तु मात्र रह गयी है।

पचास वर्ष पूर्व नेता सम्मानसूचक शब्द था, आज एक गाली है। राजनेताओं का अवमूल्यन कुछ तो उनके निरंतर होते चारित्रिक तथा मानसिक ह्रास के कारण हुआ और कुछ उनके द्वारा दिखाये गये झूठे

दिवास्वप्नों के कारण। राजनीतिज्ञों की विश्वसनीयता समाप्त होने के कारण देश को दिशा देने का उनका नैतिक अधिकार भी स्वतः समाप्त हो गया है।

नेताओं पर से विश्वास उठने के बाद इस देश का जनमानस निराशा के अंधकार में खो गया है। वह निराशा के सागर में गोते लगाते हुए हर प्रकार के तिनके का सहारा लेने का प्रयास करता है। कभी शेषन, कभी न्यायपालिका, कभी प्रशासनिक अधिकारी और कभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ – कभी किसी और कभी किसी का दामन थाम देश का मानस उद्धार का प्रयास करता है। अफसोस कि, हर बार वह और गहरा डूब जाता है।

शेषन जैसे चमकते सितारे कुछ क्षणों के लिए आकाश में उदित होते हैं और फिर अस्त हो जाते हैं। कोई भी एक व्यक्ति पूरी व्यवस्था को नहीं बदल सकता। इस कार्य के लिए एक व्यापक आंदोलन की आश्यकता होती है। एक व्यक्ति पर आशाएँ केन्द्रित करना एक निरर्थक मृगतष्णा है।

प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारी – अंग्रेजों ने भारत में जिस शोषक व्यवस्था की रचना की, उसके ये दो स्तंभ थे। स्वतंत्रता के पचास वर्ष बाद भी ये स्तंभ उसी प्रकार खड़े हैं। भारत के जन को हिकारत भरी नजरों से देखते हुए जन–गण–मन को ये जिस प्रकार तिरस्कृत एवं आहत करते हैं, वह एक स्वतंत्र देश के माथे पर कलंक है। गाँधी की आदर्शवादी सरिता को गंदे नाले में बदलने के लिए राजनेताओं को दोषी ठहराया जाता है। एक पतिव्रता स्त्री को वेश्या बनाने में वेश्यागामी पुरूष अकेला दोषी नहीं होता, उससे भी अधिक दोषी होती है वह व्यवस्था जो पतिव्रता स्त्री और वेश्यागामी पुरूष दोनों को वेश्यालय तक का सफर तय करवाती है। यह कैसी विडम्बना है कि आज कभी – कभी जब घोर निराशा छा जाती है तो इस देश का जनमानस इसी व्यवस्था से उद्धार की आशा करने लगता है।

डूबता हुआ व्यक्ति केवल तिनके का ही सहारा नहीं लेता, वह तो साँप और मगर को भी पकड़ लेता है। हमारा देश भी कुछ इसी प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दामन थाम रहा है। वैश्वीकरण की मृग मरीचिका से वह अपने इतिहास को भूल सा गया है। ईस्ट इंडिया कंपनी और वास्कोडिगामा के भारत आगमन को उत्सव के रूप में मनाने की बात की जा रही है। क्या यह देश भूल गया है कि बंगाल में अंग्रेज सरकार द्वारा अकाल निर्मित किया गया था जिसमें एक करोड़ लोग भूख से तड़प–तड़प कर मर गये थे? क्या यह देश भूल गया कि द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेज और अमरीकी सैनिक कम मरे थे, भारतीय अधिक मरे थे? डूबते हुए व्यक्ति को मगर और साँप भी मित्रवत दिखाई देते हैं। निराशा के सागर में डूबते हुए यह देश शायद अपनी चेतना और याददाश्त खो बैठा है तथा मगर एवं साँप के मिले–जुले षड़यंत्र का शिकार हो रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को समझने में भी हमारा राष्ट्रीय मानस कई मोड़ों से गुजरा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत के शासक वर्ग ने यह प्रचारित किया कि हमें आजादी अहिंसा के माध्यम से मिली है और अहिंसा तथा शाँति के प्रतीक के रूप में विश्व हमारा सम्मान करता है और करता रहेगा। क्रांतिकारियों का बलिदान, सैनिक विद्रोह, आजाद हिंद फौज़ की लंबी लड़ाई – इन सबको न केवल भुलाने का प्रयास किया गया अपितु कुछ हद तक झुठलाया भी गया। गाँधी और नेहरू के आभामंडल को तोड़कर देश का मानस विश्वदर्शन नहीं कर सकता था। देश मानता था कि नेहरू का सम्मान पूरा विश्व करता है तथा इस सम्मान को अपना सम्मान मानकर पूरा देश सम्मोहन की स्थिति में जी रहा था।

चीनी आक्रमण ने हमारी तंद्रा खोली। हमें मालूम हुआ कि अहिंसा एक खोखला शब्द है। देश को पहली बार आभास हुआ कि आजादी को अक्षुष्ण रखने के लिए सुंदर गुलाब की नहीं, बंदूकों और तोपों की आवश्यकता होती है। कसाईयों के मध्य में खड़ी निरीह भेड़ की जो स्थिति होती है, कुछ वैसी ही स्थिति में तंद्रा टूटने पर देश ने अपने आप को पाया।

१९६५ और १९७१ की विजय के कारण, इस मनःस्थिति से कुछ हद तक देश उभर पाया था। किंतु युद्धों के कारण बड़ी महँगाई ने देश को जीवन की सच्चाईयों के सम्मुख खडा कर दिया। महँगाई और बेरोजगारी ने राष्ट्र के युवा को आक्रोश से भर दिया और एंग्री यंग मैन का जन्म हुआ।

युवा आक्रोश ज्वालामुखी के रूप में फटने को बेताब था। इस आक्रोश को जयप्रकाश नारायण ने नेतृत्व दिया। एक ऐसा नेतृत्व जो स्वयं दिग्भ्रमित और विचारशून्य था। क्रोध में आकर अपने घर के बर्तन और फर्नीचर तोड़ लेने से किसी समस्या का हल नहीं होता। क्रोध उतर जाने पर ग्लानि, निराशा और विषाद के भाव मानस पर अवश्य छा जाते हैं। कुछ इसी प्रकार के भाव भारतीय युवा के मानस पर भी छा गये। निराशा व्यक्ति पर विचित्र प्रभाव डालती है। वह स्वकेन्द्रित हो स्वार्थी, लोभी और भौतिकवादी हो जाता है। आज देश का मानस निराशा के गहनतम अंधकार से जूझते हुए एक ऐसे स्वार्थवादी युग में प्रवेश कर चुका है जो हमारी सामाजिक व्यवस्था को भी ध्वस्त करता प्रतीत होता है।

इस देश ने सैकड़ों वर्षों की गुलामी झेली, जिस काल में उसने अनगिनत अत्याचार सहे। फिर भी इस देश का आत्मबल क्षीण नहीं हुआ, देश का स्वाभिमान और देशवासियों के नैतिक मूल्य कभी कमजोर नहीं हुए। गाँधी की अहिंसा हो या भगतसिंह का बलिदान या सुभाष का साहसिक नेतृत्व – सबके पीछे वो राष्ट्रवादी भावना थी, जिसे सैकड़ों वर्षों की गुलामी और अंग्रेजों के अत्याचार भी मिटा नहीं सके थे। फिर इन पचास वर्षों में यह क्या हो गया कि देश निराशा में डूब रहा है?

शत्रु को पहचान लेने के बाद शत्रु से लड़ना सरल हो जाता है। स्वतंत्रतापूर्व हमें मालूम था कि हमारा शत्रु कौन है। अतः लडाई आसान थी। आज हमें नहीं मालूम कि शत्रु कौन है तथा समस्याओं का मूल कारण क्या है, अतः हम उलझन में हैं।

इस गहनतम निराशा के काल में भी हमारे देश में न तो विद्वानों की कमी है, न बुद्धिमानों की; न तो शूरवीरों की कमी है, न उत्साह और जोश की; न तो वैज्ञानिकों की कमी है, न इंजीनियरों की; न तो राष्ट्रभक्तों की कमी है, न राष्ट्र पर मर मिटने वालों की; न तो प्रतिभा की कमी है, न योग्यता की। कमी है तो जाग्रति की; कमी है तो व्यस्थापन की; कमी है तो अवरोधों को दूर करने की संगठित इच्छाशक्ति की।

मेरा विश्वास है कि इस देश का अंधकारपूर्ण समय समाप्त होने को है। इस देश की सोयी हुई चेतना अंगड़ाई ले रही है। जब यह देश वास्तविक अर्थों में उठ खड़ा होगा, तो यह भारत का ही नहीं, पूरे विश्व के स्वर्णिम युग का प्रारंभ होगा।

नवोदय आंदोलन के आव्हान पत्र को राष्ट्र को अर्पित करते हुए मैं कामना करता हूँ कि प्रतीक्षा की घड़ियाँ शीघ्रातिशीघ्र समाप्त हों तथा भारत विश्वपटल पर एक नये सूर्य की तरह उदित होकर पूरे विश्व में नवोदय का मार्ग प्रशस्त करे।

मैं एक ऐसे नवोदय की कामना करता हूँ जिसमे सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के मूलमंत्र के आधार पर नयी सामाजिक संरचना का निर्माण हो; जिसमें जगत का और जगत के प्रत्येक प्राणी का कल्याण हो; जिसमें न तो शोषण हो और न ही अत्याचार; जिसमें मानवीय मूल्यों पर आधारित न्याय व्यवस्था हो; जिसमें न तो गरीबी हो और न ही भुखमरी और बेरोजगारी।

कामनाएँ स्वप्न की तरह होती हैं। स्वप्न देखना सरल है किंतु स्वप्न को मूर्तरूप देना कठिन होता है। सुखद स्वप्न और शुभ कामनाएँ यथार्थ के कठोर मरूस्थल को तभी पार कर पाती हैं जब सर्वस्व दाँव पर लगा परिश्रम किया जाए। मुझे विश्वास है कि इस देश के नागरिकों में ऐसा करने की शक्ति भी है और भावना भी। मन में है विश्वास, पक्का है विश्वास, पूरा है विश्वास, हम होंगें कामयाब एक दिन। और यह भी है विश्वास कि अब यह एक दिन दूर नहीं है।

मन में आशा और विश्वास के साथ नवोदय आंदोलन का आव्हान पत्र अपने प्रिय महान राष्ट्र को सादर सविनय समर्पित ।

अनिल चावला

२६ मई, १९९८

प्रथम अध्याय

बहुत लम्बी रात के बाद पौ फटने की तैयारी। एक मुर्गा अपने दड़बे से बाहर निकला। उसने हवा को सूँघा, आसमान की ओर देखा । सूरज अभी नहीं निकला था पर उसे महसूस हो गया कि रात्रि का अंत निकट है और एक नयी सुबह होने वाली है। उसने गहरी साँस ली और बाँग देने को तैयार हो गया। उसी क्षण एक उल्लू ने उसे रोका और कहा, "हे मूर्ख मुर्गे, इस घनघोर अंधकार में हम राज करते हैं। तू इस रात्रि में क्यों बाहर निकला है? क्या तू भूल गया है कि तेरे पुत्रों का हम निशाचरों ने किस क्रूरता से वध किया था ? हमारे राज के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल बजाने की मंशा रखने वाले मूर्ख मुर्गे, यह मत भूल कि मैं लक्ष्मी का वाहन हूँ। मैं तुझे इतना धन–धान्य दे सकता हूँ कि तू अपने पुत्रों की मत्यु का दुःख भूल जाएगा। हमारे इस विशाल तमोराज का अंत तेरी बाँग से नहीं होगा। तेरे पुत्र भी मृत्यु पूर्व बहुत चीखे चिल्लाए थे। यदि ध्वनि में शक्ति होती तो शायद तभी परिवर्तन हो जाता। तू जिसे विद्रोह का बिगुल समझ तमोराज के विरूद्ध उच्च स्वर में बजाने का इच्छुक है, वो तो मात्र तेरा अहंकार और वाणी मोह है। अपने अहंकार को त्याग दे और व्यर्थ आशा के सहारे जीना छोड़ कर हमसे मिल जा – इसी में तेरा और तेरे परिवार का सुख है। वैसे भी जिस सूर्योदय की तू कामना करता है और जिन प्राणियों को तू जगाना चाहता हैं वे तुझे कौन सा सुख देने वाले हैं। जागते ही प्रत्येक प्राणी अपने–अपने स्वार्थ में डूब जाएगा और तुझे भी अपने जीवनयापन के लिए श्रम करना पडेगा। ना कोई तेरा एहसान मानेगा और ना कोई तुझे धन्यवाद भी कहेगा। तम से शत्रुता कर तूने सदा दुःख भोगा है और स्वयं एवं अपने परिवार को हानि पहुँचायी है। अब भी समय है कि तू अपना मूर्खतापूर्ण हठ छोड़कर दुःख से सुख तथा हानि से लाभ की ओर अग्रसर हो।"

मुर्गे ने पुनः आकाश की ओर देखा। अभी रोशनी फैलना प्रारंभ नहीं हुई थी किंतु हवा की गंध में परिवर्तन आ गया था। मुर्गे ने उल्लू से कहा, "हे उलूकराज, यह सत्य है कि आप के तमोराज की व्यापकता के विरूद्ध मेरी शक्ति कुछ भी नहीं है। आपने मुझे इस योग्य समझा कि आप मुझे प्रलोभन दें, यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। मेरे पुत्रों की हत्या की याद दिला कर आपने मुझे डराने का भी प्रयास किया। मैं अपने पुत्रों की हत्या को भूला नहीं हूँ किन्तु मृत्यु से डरना हमारे कुल की परंपरा नहीं है। यदि मेरी मृत्यु अंधकार का प्रतिकार करने में होती है, तो यह मेरे जीवन और मेरे कुल की परंपरा का एक स्वर्णिम अध्याय होगा । आपके प्रलोभन और आपके द्वारा मुझे भयाक्रांत करने का प्रयास केवल यह सूचित करता हैं कि आप मेरी इस ध्वनि को रोकना चाहते हैं। शायद आपका विचार यह हो कि मेरी आवाज को बंद करने से सूर्योदय रूक जाएगा। हे उलूकराज मुझ जैसे तुच्छ प्राणी के पास सूर्योदय रोकने की शक्ति नहीं हैं आपके तमोराज का अंत तो अवश्यंभावी हैं । आप कुछ भी प्रयास कर लें अधंकार पर प्रकाश की विजय होगी ही । यह तो मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस प्रकाश विजय की सूचना का वाहक बनाया गया हैं । इस सौभाग्य के लिए मैं स्वयं धन्यवाद देना चाहता हूँ। इस सौभाग्य के लिए अन्य प्राणियों से मैं कतज्ञता अथवा धन्यवाद की अपेक्षा करूँ, यह तो मेरी कल्पना में भी संभव नहीं है। हे उलूकराज आपके तमोराज्य के अंतिम क्षणों में जब आपकी शक्ति क्षीण हो रही हैं और मुझमें शक्ति का संचार हो रहा है, कृप्या मुझे मेरे कर्त्तव्य से विमुख करने का प्रयास न करें। मैं पूर्व दिशा में जिस लालिमा को देख सकता हूँ , दुर्भाग्यवश आप उस सुंदर दश्य को देखने में असमर्थ हैं। इस मनोहारी दश्य को अनुभव करने के लिए प्रत्येक प्राणी, जो निशाचरी नहीं है, जाग्रत होगा ही। किंतु शुभ समाचार का वाहक बनने का सौभाग्य यदि मैंनें खो दिया तो मेरा जीवन निरर्थक हो जाएगा।"

इतना कह कर मुर्गे ने बाँग दी । आकाश आभामय हो रहा था, अन्य पक्षी भी जागने लगे । उनके कलरव के कोलाहल में उल्लू न जाने कहाँ खो गया।

इस देश ने भी बहुत लंबी रात देखी है। सैकड़ों वर्षों से अंधकार में जीते हुए, यह देश जो विश्व को आभा प्रदान करने के कारण आभारत कहलाता था, स्वयं प्रकाश की एक किरण के लिए तरस गया। गुलामी और उसके बाद के पचास वर्ष – पहले हमें बाहरी लोंगों ने लूटा और फिर अपनों ने, उस व्यवस्था का उपयोग कर जो बाहरी छोड़ गये थे। आज इस लंबी रात्रि के अंतिम प्रहर में चारों ओर निराशा छा रही है। यह देश आशा की किरण दूँढते हुए कई स्वप्नों और कई तथाकथित फरिश्तों का दामन पकड़ कर देख चुका है। अब उसे दूर–दूर तक न कोई स्वप्न दिखाई दे रहा है, न कोई देवदूत, न कोई लच्छेदार भाषणों की लोरी सुनाने वाला, न कोई लुभावने नारों की अफीम चटाने वाला। उसने इन सबको आजमा कर देख लिया, सबको मौका दे लिया। आज वो निराशा के भाव में डूबा है। वह नहीं जानता कि स्वप्न, देवदूत, लोरी और अफीम तो रात्रि का सत्य थे। वह यह भी नही जानता कि रात्रि का अन्त निकट है और नवोदय होने वाला है। हमारा यह सौभाग्य है कि हम इस शुभ समाचार के वाहक बन सकते हैं। इतिहास के इस महत्वपूर्ण संक्रांति काल में निराशा से घिरे इस देश को यह बता कर यश पा सकते हैं कि हर शाख पे उल्लू बैठा है परन्तु अभी थोडी देर में जब सूर्य के प्रकाश से गुलिस्ता रोशन होगा तो उल्लू न जाने कहाँ खो जाएँगें। तमोराज के काल में उलूक दलों को लड़ते–झगड़ते, चीखते–चिल्लाते पूरा देश देख रहा है । समाचारपत्रों या रेडियो या टेलीविजन के माध्यम से, उल्लुओं की ऊलजलूल हरकतों को देखना और सुनना पूरे देश का मुख्य शगल बन गया है। पर साथ ही इनको देख–देख देश निराशा के गहरे सागर में भी डूबता जाता है।

आइये, हम सब मिलकर नवोदय की पूर्व सूचना दे कर इस निराशा के अंधकार को समाप्त करने का प्रयास करें।

द्वितीय अध्याय

सूर्योदय आकाश में बाद में होता है, मुर्गे के हदय में पहले होता है। पर जिस मुर्गे का जन्म ही रात्रि में हुआ और जिसने कभी सूर्य देखा ही नहीं, उसके लिए तो समस्या विकट होती है। उसके रक्त के कण–कण में सूर्योदय की परिकल्पना होती है, परंतु उसकी आँखों ने तो सूर्योदय देखा नहीं होता। उसे तो कभी बाँग देने का सौभाग्य मिला ही नहीं। वह तो शायद यह जानता ही नहीं कि उसकी नियमित कूक्कू जैसी धीमी वाणी से आगे बढ़ उसके पास ओजस्वी बाँग का प्रकृति प्रदत्त उपहार भी है। जन्म से ही वह उल्लुओं की तीखी कर्कश ध्वनि सुनता आया है। कहाँ उल्लू की दूर–दूर तक सुनी जा सकने वाली तेज वाणी जिसे सुनते ही प्राणी–प्राणी के हदय में भय का संचार हो जाए, और कहाँ उसकी दबी, घुटी, भयाक्रांत कूक्कू। उलूकगण उसका मजाक भी तो बनाते रहे हैं। वह भी व्यंग्य बाणों की पीड़ा को झेलने का आदी हो गया है। यह पीड़ा और एक अव्यक्त कुंठा उसके जीवन का अंग बन गयी है।

आज जब से उसने सुना हैं कि नवोदय होने वाला है, तो वह स्वयं में आ रहे परिवर्तनों से अचंभित है। उसको यह आभास हो रहा है कि उसके रक्त में कुछ नया जोश, नयी उमंग, नया उत्साह आ गया है। उसे याद है कि एक समय उलूकगण उसे अभ्यास कर अपनी वाणी को तीखी और भयावह बनाने का उपदेश दिया करते थे। उसने कुछ समय तक ऐसे अभ्यास किये भी थे। आज वह सब कितना मूर्खतापूर्ण और निरर्थक जान पड़ रहा है। उसे नहीं मालूम कि नवोदय होता कैसा है और क्यों होता है पर नवोदय की आने की सूचना मात्र से उसका तन और मन दोंनों बदल गये हैं। इसी आल्हादपूर्ण मनः स्थिति में एक उल्लू की कर्कश और अशालीन आवाज उसका ध्यान भंग करती है। वह पुनः आशंकित हो उठता है कि क्या कहीं कोई धोखा तो नहीं होने वाला। वह घबराकर पुनः दड़बे में घुस गया।

उसे याद आते हैं विगत काल के वे सब प्रसंग जब येनकेनप्रकारेण उल्लूओं और उनके प्रलोभनों में फँसे प्राणियों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि उनकी जलायी आग से सम्पूर्ण क्रांति अथवा नवनिर्माण होगा जिससे एक नवोदय होगा। न जाने कितने मुर्गे और अनेकों चूजे भी, जिन्हें यह मालूम ही नहीं था कि सूर्योदय कैसा होता है, खिंचे चले गये और क्रूर निशाचरों द्वारा उनको उदरस्थ कर लिया गया। उसे वह भी याद आया जब मुर्गों की गरीबी हटाने के नाम पर मुर्गों को मूर्ख बनाया गया था । बेरोजगारी हटाओ, हर हाथ को काम, मन्दिर, मस्जिद, विकास, स्थायित्व – न जाने किन–किन तरह से मुर्गों को मूर्ख बना कर उनको उदरस्थ कर उलूकगण शक्तिशाली बनते रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि एक बार पुनः इतिहास दोहराया जा रहा है । मुर्गों को मूर्ख बनाना है भी तो बहुत सरल। इतिहास से कभी नहीं सीखते ये मुर्गे। कर्कशा यदि मधुर स्वर में बात कर ले तो मोहित हो सर्वस्व अर्पित कर देते हैं। कहीं फिर एक बार ! आशंका से मुर्गे की आत्मा काँप उठी। उसका आल्हाद न जाने कहाँ खो गया और भय एवं निराशा के अंधकार में वह पुनः गोते लगाने लगा ।

पर उसने स्वयं को संभाला और सोचा कि इस बार नवोदय की सूचना मुझे मेरे परम मित्र ने दी और गली के उस छोर पर रहने वाले मुर्गे ने भी दी फिर भी वह आशंकित क्यों है। रात के इस कालखंड में मित्र और शत्रु का भेद करना बहुत कठिन है। पता नहीं लगता मित्र शत्रु बन जाते हैं और शत्रु मित्र।

लोभ, लालसा, अहंकार, महत्वाकांक्षा जैसे कई उत्प्रेरक बन गये हैं जो जीवन को संचालित करने लगे हैं। अपने लाभ के लिए दूसरे का सर्वनाश तो एक मान्य सिद्धांत बन गया है। किसे मित्र कहें किस पर विश्वास करें यह कहना कठिन है। गली के मोड़ पर रहने वाला मुर्गा भी नवोदय के बारे में कह रहा था। पर इस युग में कौन मुर्गा है और कौन उल्लू यह अतंर करना भी असंभव हो गया है। उसे याद आया वह समय जब वह उल्लू की सी कर्कश आवाज निकालने का अभ्यास किया करता था। जब भी कोई उल्लू मुर्गे का रूप धारण करता है तो मुर्गा जाति का अनिष्ट और उलूकगणों का लाभ होता है। कहीं वह मुर्गा भी उल्लू तो नहीं? उसे यह भी ध्यान आया कि कई बार प्रलोभनवश अथवा मजबूरीवश मुर्गे उलूकगणों के षड़यंत्रों का अंग बन झूठी सूचनाएँ प्रसारित करते हैं। कहीं उसका मित्र तथा गली के मोड़ पर रहने वाला वह मुर्गा भी किसी षड़यंत्र का अंग तो नहीं।

अविश्वास से और अधिक निराशा का उपजना स्वाभाविक होता है किंतु भयाक्रांत, निराश, कुंठित मुर्गे ने पुनः अपनी शक्ति को एकत्रित किया और पहले अपनी चोंच, फिर अपना सिर और फिर गर्दन दड़बे के बाहर निकाली। चारों ओर अंधकार था किन्तु हवा में एक अजीब सी गंध थी एक जादुई गंध जिसको उसकी नसिकाछिद्रों ने नहीं अपितु पूरे शरीर ने महसूस किया।

वह संभावित खतरों के प्रति पूरी तरह सचेत था। उसे मालूम था कि उसने जीवन में नवोदय कभी नहीं देखा और शायद यह एक मिथ्या स्वप्न मात्र हो। पर नहीं उसके शरीर का रोम–रोम कुछ और कह रहा था, उसकी रगों में बहता खून उसे जीवन में पहली बार ललकार रहा था। वह अपने दड़बे से पूरा बाहर कूद आया और उसने एक गहरी साँस ली, जैसी उसने पहले कभी नहीं ली थी। उसने निर्णय किया कि वह अब भय, निराशा और कुंठा को दूर फेंक देगा। तभी उसने अपने कंठ से कुछ ऊपर आता अनुभव किया। यह एक ओजपूर्ण ध्वनि थी जिसने पूरी प्रकृति को गुंजायमान कर दिया। वह स्वयं आश्चर्यचकित था। उसकी यह ध्वनि उलूकगणों की भयावह, कर्कश, अशालीन ध्वनि की तरह नहीं थी पर फिर भी ओजपूर्ण थी और इसने प्रकृति के प्राणियों को जाग्रत तो किया, भयाक्रांत या आशंकित नहीं किया। उसे अब विश्वास हो गया कि नवोदय आ रहा है। अचानक अनेकों पक्षियों की आवाजें आने लगी और एक ऐसा मधुर कोलाहल प्रारंभ हो गया जो उसके लिए अभूतपूर्व था।

हममें से प्रत्येक को भी इसी प्रकार अपने हदय के अंधकार पर विजय पाकर नवोदय की उद्घोषणा करनी है। आइये, इस बदले हुए वातावरण को अपने तन–मन से अनुभव कर सभी शंकाओं और भय से आगे बढ़ कर नवोदय में विश्वास जाग्रत करें ।

तृतीय अध्याय

रात्रि का अंतिम प्रहर। सघन आबादी वाली बस्ती। हवा में फैली बदबू। सडकों पर फैला हुआ गंदा मल मूत्र युक्त पानी। कुछ भूमिगत नालियाँ अवरूद्ध हो गयी थीं। सर्वत्र फैली दुर्गंध से सब परेशान। कुछ लोग अपने घर पर खड़े होकर दुर्गंध को गालियाँ दे रहे, कोस रहे। कुछ लोगों ने अपनी खिड़कियाँ दरवाज़े बन्द कर इत्र की बोतलें खोल लीं, रूमाल में इत्र लगा लिया पर फिर भी बदबू से मुक्ति न मिली। कुछ लोगों ने तो घर पर ताला लगाया और बस्ती छोड़कर चले गये।

इस बदबू के वातावरण में कुछ शूकर अत्यन्त आनन्दित हो रहे थे। वे उस दुर्गन्धयुक्त जल में लोट रहे थे। उनका भोजन भी उन्हें उसी मल मूत्र से प्राप्त हो रहा था। लगातार मिलते भोजन और आनंदमय वातावरण के कारण ये वराहगण बहुत तंदरूस्त हो गये थे। यदि उन्हें जरा भी यह आभास हो जाता कि कोई व्यक्ति भूमिगत नाली का अवरोध समाप्त करने का प्रयास करने का विचार रखता है, तो सारे शूकर एकत्र हो उस पर हमला कर देते। शूकर उसे तब तक मारते, जब तक कि उस गंदे जल में गिर, वह व्यक्ति या तो निराश हो कर भाग जाता, या शूकरों के साथ मिल कर शूकर प्रकति का हो शूकर के समान जीवनयापन करने लगता या फिर उसके प्राणों का अन्त हो जाता।

कुछ तमाशबीन बच्चे, युवक और इक्का दुक्का वृद्ध भी वहाँ गंदे पानी में खड़े थे। उनके पाँव गंदगी में थे पर उनके कपड़े इत्यादि आस–पास के वातावरण की तुलना में स्वच्छ प्रतीत हो रहे थे। वे उस दूषित जल में घूम–घूम कर विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तलाश करते और फिर उस वस्तु को हाथ में ले कर चिल्ला–चिल्ला कर पूरी बस्ती का ध्यान उस ओर आकृष्ट करते। एक युवक को अभी–अभी एक नरमुंड मिला था। नरमुंड प्राप्त कर वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसकी खुशी छिपाये नहीं छिपती थी। यह उसके जीवन की उपलब्धि थी। वह कह रहा था कि जहाँ बाकी लोग कुछ अदद गंदी चिंदियाँ, पोलिथिन बैग, कपास इत्यादि को दिखा शोर मचा रहे थे वह नयी सनसनी लाया था। ये सब लोग जो गंदगी में सनसनी ढूँढते हुए जीवन व्यतीत कर रहे थे, उनका मानना था कि वे बस्ती की भलाई के लिए काम कर रहे थे। अपनी हरकतों से वे जनता को ये याद दिलाते रहते थे कि गंदगी कितनी दूषित है। ये लोग गंदगी में सनसनी ढूँढने के लिए प्रायः शूकरों का सहयोग लेते। शूकरों की पीठ पर सवारी कर ये वहाँ तक पहुँच जाते जहाँ कोई और व्यक्ति नहीं पहुँच सकता था। अपनी पैनी आँखों से ये लोग दूषित जल की गहराई तक देख लेते और यदि वहाँ कुछ शूकर भोज्य पदार्थ होता तो उसके बारे में वराहगणों को जानकारी देते। शूकर भी इन खोजी प्राणियों के जीवनयापन में भरपूर सहयोग करते।

इस सारे मलिन दृश्य में कुछ सिद्ध पुरूष सन्यासी भी अपना कमाल दिखाने में व्यस्त थे। वे भूमिगत नाली में बहुत गहराई तक उतरते, यहाँ तक कि आँखों से ओझल हो जाते और कुछ देर बाद पुनः प्रकट हो जाते। उनका पूरा शरीर उफनती महकती गंदगी में से बाहर निकलता तो भी ऐसा स्वच्छ और निर्मल होता जैसे गंगोत्री की गंगा में स्नान किया हो। उनकी इस अदभुत सिद्धि से सब प्रभावित थे। वराह भी उनकी प्रशंसा करते और बस्ती के जनमानस में भी उनके लिए सम्मान था। परन्तु सभी यह जानते थे कि ये सिद्ध पुरूष अपनी सिद्धि प्रदर्शन में ही डूबे रहेंगें। इनसे नाली का अवरोध दूर करने की आशा करना भी व्यर्थ है । शायद इसीलिए शूकर इन्हें कोई आघात नहीं पहुँचाते थे।

जनता को यदि कोई आशा है तो उन लोंगों से जो मूलतः नाली का अवरोध दूर करने के लिए दूषित जल में उतरे थे, किन्तु अब शूकरों के साथ मिल कर वराहमय प्रतीत हो रहे हैं। ये आरोप लगते रहते हैं कि इन वराहमय व्यक्तियों में और शूकरों में कोई अंतर नहीं है। शूकर तो ऐसी घोषणाएँ समय समय पर करते ही रहते हैं। इन सबके बावजूद किनारे खड़े लोगों और घर में खिडकियाँ बंद कर बैठे लोगों तथा दूर नाक पर सुगंधित रुमाल रख कर जाते लोगों को जो क्षीण सी आशा है, वह इन शूकरमय लोगों पर केन्द्रित है, जो कि गंदगी में लिप्त प्रतीत होते हैं। लोगों का मानना है कि इनके हदय में परिवर्तन लाने की तीव्र इच्छा है और ये परिवर्तन लाने में सहायक होगें।

कुछ हद तक यह ठीक भी है । आज हमारे देश की राजनीति में जो गंदगी फैली है, उसे दूर करने के लिए उन लोगों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होगी जो मूलतः सफाई करने के विचार से गये थे और आज गंदगी में लिप्त प्रतीत होते हैं। किन्तु गंदगी दूर कर पाना केवल उनके बस की बात नहीं है ।

रात्रि की समाप्ति निकट है और नवोदय होने वाला है किन्तु नवोदय तभी सार्थक होगा जब हम इस दुर्गन्धयुक्त गंदगी से छुटकारा पा सकेंगें। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस कार्य में सहयोग करना होगा। अधिक से अधिक व्यक्तियों को सिर पर कफन बाँध कर शूकरों से संघर्ष करने के लिए अपना जीवन अर्पित करना होगा तभी एक स्वच्छ समाज की स्थापना का नवोदय होगा।

आइये नवोदय की पूर्व बेला में हम सब एक स्वच्छ समाज की स्थापना हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर गंदगी से परहेज त्याग कर, गंदगी के बीच उतर, गंदगी से संघर्ष करें।

चतुर्थ अध्याय

भूमिगत नालियों के अवरूद्ध होने की समस्या का समाधान तभी संभव है जब हम भूमिगत नालियों की संरचना को समझने का प्रयास करें। संभवतः नालियों की संरचना और बनावट में ही कोई दोष हो। शायद पुरानी नालियों के अवरोध दूर करने का प्रयास करने के स्थान पर नयी नालियाँ बनाना अधिक सरल कार्य होगा।

राजनैतिक व्यवस्थाएँ कुछ– कुछ भूमिगत नालियों की तरह होती हैं। यदि सब कुछ सही चलता है, तो पता भी नहीं लगता। किसी समाज की खूबसूरती का आधार उसकी वो व्यवस्थाएँ होती है जो दिखती नहीं हैं।

स्वतंत्रता के बाद हमारे देश की राजनैतिक संरचना के आधार के रूप में संविधान की रचना की गयी। संविधान के रचनाकारों में उस काल के सर्वमान्य व्यक्ति थे। उन्हें इतिहास ने यह स्वर्णिम अवसर प्रदान किया कि वे यह ऐतिहासिक कार्य कर सकें। पिछले पचास वर्षो में जो पीढ़ी जवान हुई है, उसे जन्म से बताया गया कि हमारा संविधान विश्व का सर्वश्रेष्ठ है, हमारे संविधान निर्माता महान थे। आज हमारे देश में संविधान को एक ऐसी पुस्तक का दर्जा प्रदान कर दिया गया है, जिसके बारे में सहज रूप से चर्चा करना संभव नहीं है।

अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए हमें अपने मानस के तम को पहले दूर करना होगा। हम जब भी किसी व्यक्ति अथवा पुस्तक को महान की उपाधि देते हैं तो उसकी समीक्षा करने के अपने अधिकार को हम उसकी महानता पर न्यौछावर कर देते हैं। संविधान निर्माता सम्माननीय थे और हैं और रहेंगें। किन्तु नवोदय की इस पूर्व बेला में हमें वर्तमान संविधान की विस्तृत समीक्षा करनी होगी और संवैधानिक संरचना के अन्य विकल्पों से तुलनात्मक अध्ययन भी करना होगा। किसी भी व्यवस्था पर टिप्पणी करने के लिए व्यवस्था से उत्पन्न परिणामों का विश्लेषण करना आवश्यक है । भूमिगत नालियों का नक्शा बनाने वाला सम्माननीय एवं पूजनीय था इसलिए नालियाँ अच्छी हैं यह किसी को मान्य नहीं होगा ।

यह कहा जाता है कि विश्व का सबसे लंबा संविधान भारत का है। किन्तु यह नहीं कहा जाता कि विश्व का सबसे अधिक उलझा हुआ संविधान भी भारत का ही है। उलझाव वाली और लंबी भूमिगत नालियाँ ज्यादा बेहतर नहीं होतीं। उनमें अवरोध उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

कहा जाता है कि हमारा संविधान तो बहुत अच्छा है पर उसको लागू करने वाले लोग गलत हैं। यह हमारे देश की जनता का अपमान है। स्वतंत्रतापूर्व कुछ लोग थे और शायद आज भी कुछ लोग हैं, जो यह मानते हैं कि इस देश को व्यवस्थित रखने के लिए अंग्रेज जरूरी हैं। गुलामी की मानसिकता में जकड़े ये लोग अंग्रेजों की व्यवस्था पर आधारित संविधान में छिद्रान्वेषण करने के स्थान पर देश में ही दोष देखने हैं। नाक पर सुगंधित रूमाल रख विदेश जाने की आशा संजोये ये लोग इस देश के प्रति न तो आशावान हैं, न ही प्रयासरत। जिस विदेशी तकनीक से भूमिगत नालियाँ बनायी गयी हैं, उसकी आलोचना को गंवारूपन कहना और भूमि को दोष देना आज के पढ़े लिखे वर्ग का फैशन बन गया है।

हमें भूमि और उसके निवासियों की प्रकति के अनुसार भूमिगत नालियों की रूपरेखा बना संरचना करनी होगी। विदेशी प्रकृतिनुसार संरचना कर अपने देश और उसके निवासियों को प्रकृति में परिवर्तन का उपदेश देना मूर्खता ही कहलाएगी।

आज हमारे देश के राजनैतिक ढाँचे पर कुछ भी टिप्पणी करने से राजनीतिज्ञों का एक न एक वर्ग अवश्य रूष्ट हो जाता है। उलूक–वराह राज में प्रत्येक बात को हितसाधकों द्वारा अपने हितों की कसौटी पर कसा जाता है। अपने हितों को समाज का हित बना प्रस्तुत करना एक कला है जिसमें निपुणता आज के राजनैतिक परिदश्य में राजनीतिज्ञ के लिए आवश्यक हो गयी है। अंग्रेजों की फूट डालों और राज करो, की नीति से भी आगे बढ़ कर हमने समाज को विभिन्न आधारों पर छोटे–छोटे वर्गों में विभक्त कर दिया। उसके बाद प्रत्येक वर्ग का प्रतितनिधित्व करने वाले तथाकथित नेता अपने वर्ग विशेष के लिए लड़ते हैं। मूल परिकल्पना यह है कि यदि प्रत्येक वर्ग जागरूक हो जाए और अन्य वर्गो से पूरे दम–खम के साथ लड़ कर, उपलब्ध संसाधनों का अधिकाधिक हिस्सा लूट–खसोट ले तो पूरे समाज का विकास हो जाएगा। लिंग, जाति, क्षेत्र,, राज्य इत्यादि जितने आधार संभव थे उनके अनुसार समाज को विभाजित कर हमने एक दूसरे से लड़ा दिया है। फिर भी विकास अन्य देशों के मुकाबले धीमा है तो हमारे सर्वज्ञाता राजनीतिज्ञ शायद इस आपसी लड़ाई की दर को और बढ़ाकर तेज विकास का दिवास्वप्न देख रहे हैं।

यह हास्यास्पद भी है और शोचनीय भी। परन्तु न तो हम हँसे न ही रोएँ। यह स्थिति हमारे उस संविधान की देन है जिसे हमने अंगीकृत किया है जिस प्रकार रात्रि के वस्त्रों को उतारकर सुबह व्यक्ति नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार नवोदय के पश्चात हमें पुराना संविधान त्यागकर नया संविधान अंगीकृत करना होगा। अपने पुराने मलिन वस्त्रों को देख न तो हमें हँसना है, न ही रोना। हमें तो अपने लिए नए वस्त्रों का चुनाव करना है। नए संविधान का प्रारूप उपलब्ध है। उस का अध्ययन कर हम देखें कि क्या नया प्रारूप नवोदय के पश्चात हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप होगा।

आइए, नवोदय के स्वागतपूर्व की इस बेला में हम संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन की तैयारियाँ करें ।

पंचम अध्याय

परिवर्तन लहर, सम्पूर्ण क्रांति और नवनिर्माण जैसे लुभावने नारों की परिणति देखने के बाद नवोदय की चर्चा पर निराशावाद और संशयवाद की काली छाया का पड़ना स्वाभाविक है। संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन की बात को चुनाव पूर्व की गहमागहमी के रूप में भी देखा जाएगा। व्यवस्थाजन्य बुराईयों के लिए किसी व्यक्ति या किसी राजनैतिक दल को दोषी ठहराना भी गलत है और व्यवस्थाजन्य बुराईयों से निजात पाने के लिए किसी व्यक्ति या किसी राजनैतिक दल को आशाकिरण के रूप में प्रस्तुत करना भी गलत है। इन दोनो ही स्थितियों में व्यवस्था परिवर्तन के बारे में या तो समुचित गंभीरता का अभाव होता है या फिर व्यवस्था परिवर्तन के मार्ग के बारे में अज्ञानता होती है। जो यह जानते ही नहीं कि व्यवस्था परिवर्तन किस प्रकार हो सकता है या नयी व्यवस्था किस प्रकार की होनी चाहिए, ऐसे लोग जब परिवर्तन या संपूर्ण क्रांति की बात करते हैं तो यह एक लुभावना धोखा मात्र होता है।

इस देश की जनता ने यह धोखा एक बार नहीं कई बार खाया है। दूध का जला छाछ भी फूँक फूँक कर पीता है। नवोदय की तैयारियाँ, नये दिन के परिधान, नयी कलरव, नई ध्वनियाँ इन सब को भली भाँति देख, सुन, समझ कर ही इस देश की जनता अब किसी पर विश्वास करेगी ।

उलूक–वराह राज में सबसे अधिक दुर्गति हंस की होती है। वह उलूक की चाकरी करने और वराह का गुणगान करने को विवश होता है। पिछले पचास वर्षो में हमारे देश में यह स्थिति निरंतर बद से बदतर होती गयी है। अशिक्षित शिक्षा मंत्री की चरणवंदना करते शिक्षाविद और अपराधी रक्षा मंत्री को सेल्यूट करते सेना के सर्वोच्च अफसर। हंस की इस पीड़ा को कौन समझेगा। घायल की गति घायल जाने। हंस ही हंस की इस पीड़ा को समझ सकता है। और समझता भी है। किंतु विवश है।

नवोदय की इस पूर्व बेला में प्रत्येक क्षमतावान व्यक्ति को अपनी विवशताओं को भूल अपनी क्षमताओं को नवोदय के कार्य में समर्पित करना होगा। कवियों को नवोदय गीतों की रचना करनी होगी। विचारकों को नयी व्यवस्थाओं की परिकल्पना प्रस्तुत करनी होगी। लेखकों को नये लेख लिखने होगें। वैज्ञानिकों को भारतीय विज्ञान के नये आयामों और नयी अधोसंरचनात्मक रूपरेखा की संरचना करनी होगी। निर्माण के साथ–साथ प्रचार–प्रसार भी करना होगा । निर्माणकर्ताओं एवं रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन, समीक्षा, आलोचना, सुधार, श्रंगार इत्यादि की भी नवोदय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी ।

हंसध्वनि प्रत्येक ग्राम शहर, गली, माहल्ले में गूँजनी चाहिए और गूँजेगी भी। किन्तु इसके लिए न तो कोई केन्द्रीय संगठन होगा, न कोई हाई कमान और न ही विस्तत निर्देश एवं नियमावली। प्रत्येक विचारशील व्यक्ति अपनी दिशा निर्धारण स्वयं करेगा और नवोदय को साकार करने में जुट जाएगा।

आइए, हम अपने अन्दर सोये विचारशील क्षमतावान व्यक्ति को जाग्रत करें तथा नवोदय की इस पूर्व बेला में नवोदय की तैयारियों में जुट जाएँ।

षष्ठः अध्याय

रात्रि के अंतिम प्रहार का घोर अंधकार और कुछ प्राणी नवोदय की तैयारी में जुटे हैं। सब स्वप्रेरणा से, स्वविवेक से और अपने कर्त्तव्यबोध से अपना कार्य यथासंभव, यथाशक्ति करने को प्रयासरत हैं। कुछ अज्ञानी उन पर हँसते हैं और कुछ उन्हें हतोत्साहित करने की चेष्टा कर रहे हैं। किन्तु इन से बहुत अधिक खतरनाक, वे उलूक–वराह गण हैं जो नवोदय की तैयारियों की प्रशंसा करते हैं और नवोदय आन्दोलन का अपहरण कर इसे अपनी स्वार्थसिद्धि का माध्यम बनाना चाहते हैं ।

भारत में अनुभव, वरीयता और वरिष्ठता के प्रति जो सम्मान है, वह विश्व में अद्वितीय है। साधारण काल में यह उचित भी है। किन्तु असाधारण काल की नैतिकता और मानदण्ड भी असाधारण होने चाहिएँ। पिछले पचास वर्षों में इस देश का दोहन करने वाले उलूक–वराह गणों के पास अनुभव का भंडार है और कुटिलता का भी। उनमें से कुछ नवोदय का स्वप्न संजोये भोले प्राणी के पास आकर कहेंगें, "हे बालक ,हम तुम्हारी दूरदष्टि और बुद्धिमता से प्रभावित हैं। तुम्हारी नवोदय की चर्चा से हमें यह आभास हुआ है कि इस देश और समाज के प्रति हमें भी कुछ करना चाहिए। तुम्हारे सुन्दर स्वप्न को साकार करने के लिए हमारे पास अनुभव और संसाधनों का भंडार है। हमारे अनुभवी मार्गदर्शन के बिना तुम्हारा स्वप्न राह से भटक अजनबी रास्तों पर चला जाएगा, जहाँ यथार्थ की कठोर चट्टानों पर टकरा वह मृत्यु को प्राप्त होगा। वत्स, आओ हमारी उँगली को थाम हमारे साथ चलो। हम तुम्हें बिना किसी तकलीफ के तुम्हारे गन्तव्य की ओर ले जाएँगे। तुम न तो भूतकाल के बारे में स्पष्ट जानते हो, न ही भविष्य के बारे में। हमने भूत को भली भाँति देखा और समझा है तथा उससे जो हमें ज्ञान प्राप्त हुआ है, उससे हम भविष्य को तुमसे बेहतर जानते हैं। अतः संकोच त्याग कर, हमारे बलिष्ठ कंधों पर बैठो तथा द्रुत गति से बिना किसी विलंब और कठिनाई के नवोदय की दिशा में चलो।"

उक्त निवेदन सुन सरल सहज व्यक्ति का मोहित होना स्वाभाविक है। किन्तु इस मायावी छल में फँस कर प्राणी उन अंधी, अंधेरी गलियों में खो जाता है, जहाँ सूर्य तो क्या सूर्य की कल्पना भी नहीं पहुँच पाती। इस मायावी छल से बचने के लिए हमें अनुभव, वरीयता और वरिष्ठता के प्रति अपने आदर भाव को तिलांजलि देकर प्रतिभा एवं योग्यता आधारित आदरमूल्यों को स्थापित करना होगा।

पद संबंधित आदर भाव तो मानव की कमजोरी हर देश में है। किन्तु पदधारी के इर्द–गिर्द निर्मित आभामंडल से चकाचौंध हो सत्य को नकारना हमारे देश की विशेषता है। उलूक–वराह गण इस का भी लाभ उठाकर नवोदय आन्दोलन को दिग्भ्रमित करना चाहेंगें। उच्च पदाधिकारी उलूक दंभपूर्ण वाणी में कहेगा, "हे स्वप्नदृष्टा , तुम्हारे ,स्वप्नों को साकार करने के लिए तुम्हें योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता होगी । तुमने अनुभव को महत्व न देने की जो बात की है, वह सर्वथा उचित है। किन्तु जिन जाहिल, गँवारों, मूर्खों ,अज्ञानियों को तुम एकत्र कर रहे हो, वे तुम्हारे स्वप्न को मूर्तरूप नहीं दे सकते । इनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी योग्यता सर्वमान्य एवं जगतसिद्ध हो। यदि इनमें से कोई भी योग्य होता, तो किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो, आज किसी पद को सुशोभित कर रहा होता। मैं और मेरे मित्र जिनकी योग्यता पर कोई शंका या संशय की गुंजाइश ही नहीं है, वे अपने पदों का त्याग कर केवल राष्ट्रहित के भाव से नवोदय के कार्य के लिए तन मन धन से समर्पित हो सकते हैं। बशर्ते हमें

हमारी योग्यता और पद के अनुरूप सम्मान मिले तथा हमें नवोदय आन्दोलन की दिशा निर्धारण का अधिकार मिले।"

इस तार्किक प्रस्तुति का भी प्रतिकार करना होगा । पदधारी यदि सर्वगुणसम्पन्न होते तो देश की व्यवस्था में परिवर्तन की आवश्यकता ही नहीं होती । यद्यपि पदधारी और अनुभवधारी व्यक्तियों के गुणों को नकारा नहीं जा सकता , तथापि हमें यह समझना होगा कि वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत पदधारी और अनुभवधारी व्यक्ति के मानस और व्यक्तित्व में व्यवस्था इतनी गहरी पैठ बना लेती है कि उस व्यवस्था को पूरी तरह त्याग नयी व्यवस्था की कल्पना करना भी उसके लिए कठिन हो जाता है। किन्तु यदि कोई पदधारी अथवा अनुभवधारी व्यक्ति अपनी योग्यता के बल पर नवोदय आन्दोलन में कोई योगदान करता है तो उसे यथोचित सम्मान और आदर मिलना चाहिए।

नवोदय आन्दोलन की परिकल्पना एक संगठन विहीन जन आन्दोलन की है। सुविधानुसार स्थानीय स्तर पर समितियाँ बनाना और उनमें क्षेत्रीय प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय हेतु समितियों का गठन तो अनिवार्य होगा । किन्तु वृहदाकार शक्तिशाली संगठन नवोदय की मूल परिकल्पना के विरूद्ध होगा। नवोदय की परिकल्पना में प्रत्येक घर, आँगन, बगिया में स्वतः उगते और खिलते फूल हैं न कि केन्द्र के आदेश अथवा निर्देशानुसार चिपकाए गये कागज के फूल। विकेन्द्रीकत, ढाँचारहित, संगठनविहीन आन्दोलन का अपहरण अधिक कठिन कार्य होता है।

प्रत्येक व्यक्ति यदि नैसर्गिक मूल्यों के आधार पर दिशा निर्धारण कर अपनी समस्त योग्यताओं और क्षमताओं को नवोदय के कार्य में समर्पित करता है तो समाज द्वारा उसका मूल्यांकन उसके कार्य के आधार पर ही किया जाएगा। संगठनों में जोड़–तोड़, चाटुकारिता, कुटिलता, मायावी छल, इत्यादि से घुसपैठ और कालांतर में संगठन का अपहरण संभव है किन्तु यदि व्यक्ति के नैसर्गिक मूल्यों पर कोई आन्दोलन आधारित है तो उसका अपहरण आसान नहीं होता।

आइये हम नैसर्गिक मूल्यों को समझें और पुरानी व्यवस्था के अनुभवधारी तथा पदधारी व्यक्तियों के तथाकथित मार्गदर्शन से बच कर, नवोदय को समर्पित हों।

सप्तम अध्याय

नवोदय की कोई भी चर्चा यूरोपीय नवोदय आंदोलन **(Renaissance Movement)** की चर्चा के बिना अधूरी रहेगी। यूरोप ने भी एक लंबी अंधकारपूर्ण रात्रि का अनुभव किया था और उसके बाद वहाँ नवोदय का आगमन हुआ था। यूरोपीय नवोदय आन्दोलन ने यूरोप की कला, साहित्य, राजनीति, चिंतन इत्यादि को एक नयी दिशा दी थी।

चर्च द्वारा चंद पुस्तकों के आधार पर मानव की जो घेराबंदी की गयी थी, उसके विरूद्ध विद्रोह यूरोपीय नवोदय आन्दोलन का मूल था। चर्च की प्रतिबंधात्मक शक्ति में उत्तरोत्तर विकास यूरोपीय तमोयुग की मुख्य विशेषता थी।

हिन्दू धर्म न तो कभी पुस्तक आधारित रहा न ही कभी संगठन आधारित रहा।
आकाश से सागर तक जो कुछ है – उसे स्वीकारने वाला,
उसके प्रति श्रद्धा रखने वाला हिंदू है। हिंदू धर्म यथार्थवादी एवं प्रकृतिवादी धर्म है।

हिन्दू धर्म का मूल मंत्र सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है। इन तीन शब्दों की संक्षिप्त विवेचना करना उपयुक्त होगा।

विश्व में जो कुछ है उसको हम विभिन्न प्रकार से अनुभव कर, अपने मानसपटल पर उसका प्रतिबिम्ब बनाते हैं। यदि प्रतिबिम्ब और जगत में समानता है तो प्रतिबिम्ब सत्य है, अन्यथा असत्य। समानता के मापदण्ड प्रमाण हैं। प्रमाणों के प्रकारों और उनकी उपयुक्तता के बारे में पारस्परिक चर्चा हो सकती है। यह भी संभव है कि कुछ प्रमाणों को एक व्यक्ति मान्य माने और दूसरा उन्हें अमान्य कर दे। उदाहरणस्वरूप ईश्वर को अपने अंतःकरण की अनुभूति से अनुभव करना कुछ ने ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में स्वीकारा और कुछ अन्य ने अस्वीकार कर दिया; तदानुसार आस्तिक और नास्तिक का सत्य भिन्न हो गया। किन्तु दोनों हिंदू है। क्योकि दोनों की आस्था सत्य में है। सत्य में आस्था के कारण हिंदू का विज्ञान से कभी विरोध हो ही नहीं सकता। हिंदू प्रमाण आधारित सत्य और प्रमाण संबंधी ज्ञानशास्त्रीय स्वतंत्रता को सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है। अतः वह किसी भी पुस्तक को परम सत्य नहीं मानता। प्रत्येक पुस्तक को सम्मान देते हुए हिन्दू स्वविवेक से सत्य निर्धारण को मान्यता देता है। यूरोप में सैकड़ों वर्षों तक यह माना जाता रहा कि पुरूष के मुँह में स्त्री के मुँह से अधिक दाँत होते हैं। इस मान्यता का आधार कोई पुस्तक थी जो पवित्र मानी गयी थी। इस मान्यता के विरूद्ध प्रमाण एकत्र करने को ही दंडनीय अपराध माना जाता था। अतः पुरूष और स्त्री के दाँत गिनना ही अपराध था। यह हिंदू को कतई स्वीकार्य नहीं हो सकता।

शिव का अर्थ है – जगत कल्याण। सत्य को स्वीकार करने के बाद विश्व के कल्याण की भावना आवश्यक है। मानव के प्रत्येक कृत्य, मान्यता, और विश्वास के संबंध में यह एक महत्वपूर्ण कसौटी है। कोई कृत्य या विश्वास सत्य पर आधारित होने मात्र से ही उचित नहीं हो जाता। व्यक्ति की तीव्र इच्छा एक सत्य है किंतु यदि उसकी इच्छापूर्ति से जगत का कल्याण नहीं होता तो उसे इच्छापूर्ति की अनुमति नहीं दिया जाना उचित होगा। कल्याण के बारे में देश–काल के अनुसार परिकल्पना परिवर्तित

हो सकती है और इस संबंध में मतभेद स्वीकार्य हैं। किंतु कोई व्यक्ति यदि किसी कृत्य को उचित अथवा अनुचित घोषित करने हेतु जगत कल्याण के तर्क को छोड़, पुस्तक का आधार लेता है, तो वह हिंदू नहीं है।

अतःकरण में जो सु–भाव जाग्रत करे वह सुन्दर है। मन में उठते अच्छे भावों को परिभाषित करना कठिन कार्य है और इसे विषय में मतभेद हो सकते हैं। किंतु स्पष्टतः समस्त कलाओं का उद्देश्य सु–भाव को जागत कर आनन्द प्रदान करना है। हिंदू सुंदर को स्वीकारते हुए समस्त कलाओं को स्वीकारता है। वह इस संबंध में वैयक्तिक स्वतंत्रता को स्वीकारता है।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् अर्थात विज्ञान नीति तथा कला। इन्हें मूलाधार मानने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिंदू है, चाहे वह विश्व के किसी भाग का भी निवासी हो ,चाहे वह किसी भी प्रकार से किसी भी इष्ट की उपासना करता हो, चाहे वह शाकाहारी हो या माँसाहारी हो।

प्रभु यीशू मसीह के उपदेशों का यदि अध्ययन किया जाए तो उसमें और कई हिंदू संतों के उपदेशों में कोई विशेष अंतर प्रतीत नहीं होता। चर्च की परिकल्पना प्रभु यीशू मसीह की देन नहीं है और न ही प्रभु यीशू मसीह ने बाइबल अथवा अन्य किसी पुस्तक की रचना की। अतः यूरोप के तमोयुग के लिए प्रभु यीशू मसीह को दोष देना गलत होगा।

यूरोप का नवोदय आन्दोलन भी प्रभु यीशू मसीह के विरूद्ध नहीं था। वह तो चर्च और चंद पुस्तकों को परम सत्य मानने के विरूद्ध था। यूरोपीय नवोदय आन्दोलन के प्रणेताओं ने सत्य और सुन्दर के मूलभाव को स्वीकार विश्व के इतिहास को एक नयी दिशा दी।

भारत के इतिहास की अंधकारपूर्ण रात्रि अभी समाप्त नहीं हुई है। हिन्दू धर्म के विशाल विश्व धर्म स्वरूप को त्याग उसे संकुचित कर उसका चर्चीकरण करने के प्रयास हो रहे हैं। हिन्दू धर्म को जो लोग बिल्कुल नहीं समझते, वे हिन्दू धर्म के ठेकेदार बन गये हैं। जिस धर्म के अनुयायी के लिए मनुष्य का माँस खाना और रक्त पीना भी वर्जित नहीं हैं, उस धर्म का मूलाधार अहिंसा बताया जा रहा है। हिंदू धर्म को भौगोलिक आाधार पर परिभाषित किया जा रहा है। स्पष्टतः यह सब अज्ञानता और स्वार्थजन्य कुटिलता का परिणाम है।

भारतीय नवोदय आन्दोलन को हिन्दू धर्म के चर्चीकरण और संकुचितीकरण के विरूद्ध संघर्ष करना होगा। यह सच है कि हिन्दू धर्म पर चर्चनुमा संगठनों का शिकंजा अभी उतना कठोर नहीं हुआ है जितना यूरोप के मध्य काल में चर्च का था। किंतु चर्चीकरण की प्रक्रिया बहुत व्यापक स्तर पर फैल चुकी है और उसके अनुयायियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

नवोदय आन्दोलन के लिए एक व्यापक संगठन को नकारने का कारण चर्चीकृत व्यवस्था से बचना है। हमें यूरोपीय नवोदय आन्दोलन की तरह एक रचनात्मक आन्दोलन प्रारंभ करना है जो सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के सिद्धान्त के आधार पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दे ।

आइये हम इतिहास से सीखें और नवोदय के प्रकाश से अंधकार में पनपती व्यवस्थाओं का अंत कर सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की पुर्नस्थापना करें।

अष्टम अध्याय

यूरोपीय नवोदय आन्दोलन चर्च के शिकंजे के विरूद्ध तो था पर प्रभू यीशू मसीह के विरूद्ध नहीं था। यदि हम उस काल का यूरोपीय साहित्य एवं इतिहास देखें तो चर्च के विरूद्ध विद्रोह दो रूपों में दिखाई देता है, पहला उदारवादी चर्चों की स्थापना, दूसरा धर्म के विरूद्ध विद्रोह। दोनों लगभग साथ–साथ चलते रहे और दोनों ने यूरोपीय समाज को प्रभावित किया है। जैसे–जैसे चर्च का शिकंजा ढीला होता गया, वैसे–वैसे यूरोपीय मानस पर धर्म की पकड़ ढीली होती गयी, प्राचीन जीवन मूल्यों को त्याग कर नये जीवन मूल्यों को स्थापित किया जाने लगा।

प्रभु यीशू ने तो प्यार की बात की थी, मिल बाँट कर खाने की बात की थी, गरीब को गले लगाने की बात की थी, गोरे और काले में फर्क नहीं किया था। यह मानव इतिहास की सबसे बडी विडम्बना कही जाएगी कि उसी प्रभु यीशू का नाम लेने वालों ने लोभ और शोषण पर आधारित साम्राज्यों की स्थापना की। यूरोपीय नवोदय के पूर्व भी यूरोप का रक्तरंजित इतिहास था, जिसमें रक्तपात के लिए चर्च भी कुछ हद तक जिम्मेदार थी। किन्तु नवोदय के बाद तो यूरोपीय पूरे विश्व में फैल गये और उन्होने जो अत्याचार और रक्तपात किया, उसकी तुलना मानव इतिहास में कोई नहीं है। अपने लालच के लिए शोषण, क्रूरता, अत्याचार, रक्तपात, और हत्याएँ व्यापक पैमाने पर करते हुए गोरे आदमी ने प्रभु यीशू मसीह के नाम का जो दुरूपयोग किया, उसे स्वर्ग से जब भी प्रभु यीशू मसीह ने देखा होगा तो उन्होंने कोटि–कोटि बार सूली पर चढ़ाये जाने वाली पीड़ा अनुभव की होगी।

यूरोपीय नवोदय आंदोलन गोरे आदमी के जीवन में तो वैभव का प्रकाश लाया पर विश्व के बाकी निवासियों के जीवन में गुलामी, भुखमरी और मौत का ऐसा तांडव लाया जिसकी विस्तृत जानकारी इतनी भयावह और वीभत्स है कि आज की पीढ़ी उसको भूलना ही ठीक समझती है। आज जब हम नवोदय आंदोलन की बात कर रहे हैं तो क्या विश्व को आशंकित हो जाना चाहिए ?

यूरोपीय नवोदय आंदोलन गोरे आदमी के जीवन में वैभव और समद्धि तो लाया, किंतु सुख और आनन्द नहीं लाया। आज जिस मात्रा तथा स्तर की भौतिक सुविधाओं का उपभोग गोरा आदमी करता है, वह मानव इतिहास में अभूतपूर्व है। फिर भी पारिवारिक क्लेश, सामाजिक विघटन और हिंसा, भटकती युवा पीढ़ी जैसी विराट समस्याओं से उसे जूझना पड़ रहा है। चर्च का मानना है कि इन समस्याओं से निबटने के लिए गोरे आदमी को चर्च की शरण में ही आना पड़ेगा। गोरे आदमी की चिंतन प्रकिया पर सत्य और सुंदर की मानसिकता इतना गहरा असर कर गयी है कि वह जब चर्च में जाता भी है तो मध्ययुगीन मानव की तरह आँखे बंद कर के नहीं जाता। अतः चर्च का प्रभाव सीमित होता है। दूसरी ओर चर्च आज भी अपनी मध्ययुगीन मानसिकता को पूरी तरह नहीं छोड़ पायी है। पुस्तक को नकार प्रभु यीशु मसीह के उपदेशों को बालसुलभ सहजता से अंगीकृत करने पर तो चर्च के अपने अस्तित्व का ही संकट आ जाएगा।

स्पष्ट है कि यूरोपीय नवोदय आंदोलन द्वारा लाया गया नवोदय अपूर्ण था। इससे मानव जाति और विश्व के कल्याण के स्थान पर विनाशकारी प्रवृत्तियों को बल मिला।

भारतीय नवोदय आंदोलन उस रिक्ति को भरेगा जिसके कारण यूरोपीय नवोदय अपूर्ण रह गया। यूरोपीय नवोदय आंदोलन ने सत्य और सुंदर को तो स्वीकारा पर शिव अर्थात जगत कल्याण को समुचित महत्व नहीं दिया। व्यक्ति के कल्याण से जगत कल्याण स्वयंभू हो जाएगा, ऐसा मान लिया गया। स्वार्थसिद्धि को ही सर्वोच्च स्थान दिया गया। इस के परिणाम जगत के सामने हैं।

भारतीय नवोदय आन्दोलन जगत कल्याण को सत्य और सुन्दर के समकक्ष स्थापित करने को प्रतिबद्ध है। भारतीय मानसिकता में तो शिव अर्थात कल्याण का सदा से महत्व रहा है । आज उस के प्रति भारतीय मानस में चेतना पुनः जाग्रत करनी होगी। साथ ही विश्व के अन्य देशों में भी शिव–भाव को स्थापित करना होगा।

यूरोपीय नवोदय की अपूर्णता से जन्मी काली छाया ने पूरे विश्व को आक्रांत और रक्तरंजित कर दिया तथा मनुष्य को सुख और आनन्द से दूर कर दिया। भारतीय नवोदय आंदोलन उसी काली छाया को दूर कर पूरे विश्व में संपूर्ण नवोदय का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आइये हम जगत के कल्याण हेतु यूरोपीय नवोदय की अपूर्णता को शिव भाव से पूर्णता प्रदान करें।

नवम अध्याय

वहाँ एक विशाल भव्य इमारत थी। सैकड़ों वर्ष पूर्व आकम्रणकारी लुटेरों ने उसे ध्वस्त कर दिया था। किंतु उस इमारत के प्रति लोगों में अपार स्नेह था। स्नेहीजन ध्वस्त इमारत के खंडहरों से पत्थर अथवा अन्य भग्नावशेष अपने घर ले गये। इस प्रकार इमारत के लाखों छोटे–छोटे टुकड़े दूर दूर तक फैल गये। स्नेहीजनों द्वारा ले जाए गये इन भग्नावशेषों के माध्यम से उस इमारत की याद पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रही। स्नेहीजनों ने उन पत्थर या लकडी या लोहे के टुकड़ों को पूजा भाव से सहेज कर रखा और उसे पारिवारिक धरोहर माना। आक्रमणकर्ताओं ने कई बार इन भग्नावशेषों को रखने वालों को दंडित तथा प्रताड़ित भी किया। कई बार घरों की तलाशी ले भग्नावशेषों को एकत्र कर नष्ट करने के अभियान भी चलाए गये। किंतु दूर दूर तक फैले अवशेषों में से फिर भी कुछ बच गये। कुछ लोगों ने भग्नावशेषों से मिलते जुलते पत्थर या लोहे या लकड़ी के टुकडों को घर में पूजा स्थान पर रख कर भग्नावशेष के समान स्नेह दिया। कालांतर में इन नकली भग्नावशेषों और असली भग्नावशेषों में अंतर करना असंभव हो गया।

समय ने करवट ली। आक्रमणकारियों का आतंक समाप्त हुआ। नये निर्माण की संभावनाएँ पुनः दिखाई देने लगी। उस विशाल भव्य इमारत के पुनर्निर्माण की माँग उठने लगी। सैकड़ों वर्षों से जिस स्वप्न को संजोये कई पीढ़ियाँ काल की गोद में सो गयी थी, उस स्वप्न को मूर्त रूप देने का समय अब आ गया था।

शिल्पी, मिस्त्री, कर्मी इत्यादि एकत्र हो चुके थे। इमारत का निर्माण कार्य प्रारंभ होना था। परंतु निर्माण स्थल पर भीड़ और शोर का वातावरण था। दूर–दूर से हजारों, लाखों लोग निर्माण स्थल की ओर चले आ रहे थे। प्रत्येक के हाथ में कोई पत्थर या लोहे या लकड़ी का टुकडा था जिसे वह भग्नावशेष बता कर शिल्पी से उसे नयी इमारत के सबसे महत्वपूर्ण स्थान पर लगाने का आग्रह कर रहा था। प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथ के भग्नावशेष को सबसे महत्वपूर्ण बताने के लिए तर्क–वितर्क कर रहा था। नींव की खुदाई हो चुकी थी। पर आगे का काम इसी वाद–विवाद में उलझ गया था कि किस भग्नावशेष को कहाँ लगाया जाया।

शिल्पी जैसे ही किसी भग्नावशेष को हाथ में ले कर देखने लगता कि चारों ओर से उस भग्नावशेष के विरूद्ध स्वर उठने लगते। कोई उसे नकली बताता। कोई उसको लाने वाले के चरित्र पर छींटाकशी करता। कोई उसको आक्रमणकारियों द्वारा गढ़ा बताता। कभी–कभी तो एकत्र समुदाय में उत्तेजना इतनी बढ़ जाती कि हिंसा की स्थिति निर्मित हो जाती।

लगातार विलंब हो रहा था। भग्नावशेष लेकर आए लोग अपनी सैकडों वर्षों की श्रद्धा, तपस्या और सहेजने की मेहनत की दुहाई दे रहे थे। उनका मानना था कि यदि उनके हाथ के भग्नावशेष को छोड़ कर इमारत का निर्माण हुआ तो वह निर्माण अधूरा होगा और यह उनके सैकडों वर्षों के स्वप्न के साथ धोखा होगा।

भग्नावशेष लेकर आए हजारों लाखों जन अब दलों में बट गये थे। प्रत्येक दल ने अपने भग्नावशेषों को एकत्रित कर, उनका सामूहिक गुणगान प्रारंभ कर दिया था। प्रत्येक दल अपने भग्नावशेष समूह को समुचित स्थान दिलाने के लिए प्रतिबद्ध और संघर्षशील। विभिन्न दलों के बीच में कभी तो गरमागरमी और युद्ध का सा माहौल और कभी प्रेमपूर्ण चर्चाएँ। विभिन्न दलों को आश्वासन देते नेता और उनके अनुयायी।

दूर दूर तक फैला बड़ा विचित्र दृश्य। अवशेषों का ढेर लगाये लाखों लोग, आँखों में एक स्वप्न संजोये पर अपने हाथ के भग्नावशेष के मोह से ग्रसित, अपने क्षुद्र स्वार्थ को सर्वोपरि मानते हुए आपस में झगडते हुए – अपने ही स्वप्न की पूर्ति की राह में रोड़े अटकाए बैठे थे। शिल्पी, मिस्त्री और कर्मी किंकर्त्तव्यविमूढ हो एक कोने में दुःखी भाव से बैठे थे। उस इमारत का पुनर्निर्माण कैसे संभव होगा?

इस नवोदय काल में कोई तो उस शिल्पी से कहे कि "हे शिल्पी, यदि तुम्हें नवनिर्माण करना है तो तुम भग्नावशेषों से नवनिर्माण नहीं कर सकते। नया निर्माण नयी सामग्री से ही संभव है। भग्नावशेषों में शायद कोई विरला पत्थर तुम्हारे काम आ सके तो उसे अवश्य लो परन्तु यथासंभव आज के देश–काल के अनुसार नये पत्थर, लोहे और लकड़ी को गढ़ अपना कार्य पूर्ण करो। उस विशाल भव्य इमारत की याद को ताजा करने वाली इमारत यदि तुम बनाना चाहते हो तो उस इमारत को जिन कारणों से विशालता और भव्यता मिली, उन्हें ढूँढ कर उन कारक–सिद्धांतों के आधार पर नयी इमारत की रूप रेखा बनाओ। ये लोग जो पुरातन के मोह से बँधे हैं, उन्हें भूल जाओ।"

ध्वस्त होने के पूर्व हिंदू धर्म की जो विशालता और भव्य शक्ति थी उसका अंदाजा इसी बात से लग सकता है कि भारत से प्रचारक सैकड़ों की संख्या में कभी नहीं गये। परन्तु हमारा सांस्कृतिक प्रभाव जापान से यूरोप तक था भारत से गये इक्के दुक्के व्यक्ति ने भी उस देश को एक नयी वैचारिक दिशा दी। बिना खून खराबे के, बिना किसी स्वार्थ के हदय परिवर्तन करा पाना हिंदू धर्म की विशेषता रही है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के मूलमंत्र के आधार पर देश काल के अनुरूप व्यवस्थात्मक, सामाजिक और वैचारिक संरचना तो हिंदू धर्म का सदा से चलता आ रहा प्रयत्न है।

आज जब हम हिंदू धर्म की विशालता और भव्यता को पुनः स्थापित करना चाहते है तो हमें नवनिर्माण करना होगा। यह भी समझना होगा कि भग्नावशेषों से नवनिर्माण नहीं हो सकता। भग्नावशेषों से जुड़े अज्ञानी और स्वार्थी तत्वों का प्रतिकार करना होगा।

हिंदुत्व की वैचारिक इमारत की आवश्यकता आज पूरे विश्व को है तथा विश्व हमसे अपेक्षा कर रहा है कि हम शीघ्रातिशीघ्र इस इमारत को निर्मित कर जगत में एक वैचारिक क्रांति का सूत्रपात करेंगें। हमारे पाँवों में बेड़ियाँ हैं। हमारी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता जब आकाश में उडान लेने को कदम बढ़ाती है तो सैकड़ों वर्षो से सहेजे भग्नावशेषों का बोझ उसे उड़ने से रोक देता है। इन वैचारिक बेड़ियों से मुक्त हो तथा उलूक–वराह राज की प्रवत्तियों पर विजय पाकर हमें सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के मूलमंत्र के आधार पर नवनिर्माण करना होगा । तभी हिन्दुत्व की उस विशाल और भव्य वैचारिक इमारत का निर्माण होगा, जिससे पूरा विश्व आभा और आलोक प्राप्त करेगा।

आइए, नवोदय की इस शुभ बेला में हम इस नवनिर्माण में अपना योगदान करें।

दशम अध्याय

एक सिद्ध महात्मा के पास दो व्यक्ति पहुँचे और प्रणाम किया। महात्मा ने उन दोनों को आशीर्वादस्वरूप एक–एक फल दिया। दोनों प्रसन्नचित अपने अपने घर चले गये। अगले दिन उनमें से एक वापिस आया तो बहुत पीड़ा में था। महात्मा ने उससे पीड़ा का कारण पूछा तो उसने बताया कि महात्मा द्वारा दिए आम को उसने छिलके और गुठली समेत खा लिया था। आम का कुछ हिस्सा शाम तक सड़ गया था। सड़ा हुआ हिस्सा भी वह खा गया था। यह सुन महात्मा बहुत दुःखी हुए, क्रोधित भी हुए तथा उन्होंने दूसरे व्यक्ति का हाल चाल पूछा। इस पर पहला व्यक्ति हँसने लगा। जब महात्मा ने उसकी हँसी का कारण पूछा तो वह बोला, "छिलका गुठली आदि खाने की सलाह मुझे उसी ने दी थी। आपने मुझे एक आम दिया और उसे एक बड़ा अन्नानास दिया था। मुझे उसकी हालत सोच कर ही हँसी आ रही है।"

आम के छिलके खाने की मूर्खता करने वाला अन्नानास के छिलके खाने वाले की दुर्दशा को सोच प्रसन्न होता है। हर धर्म में ऐसे मूर्ख हैं जो धर्म के सारतत्व को ग्रहण करने के स्थान पर छिलके और गुठली को ही धर्म के रूप में प्रचारित करते हैं। पुस्तक आधारित धर्मों में ऐसा करने की संभावना अधिक होती है। इस बीमारी ने इस्लाम के अनुयायियों के एक वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया है। इस्लाम की बुनियाद एकात्म मानववाद है। इस्लाम इंसानियत को इबादत से ऊँचा दरजा देता है। इस्लाम के अनुसार – पाँचों वक्त नमाज अदा करने वाला हाजी भी अपने पडोसी को भूखा जानने के बावजूद यदि भरपेट खाना खा कर सो जाता है तो उसकी जीवन भर की इबादत निरर्थक है, उसे कबूल नहीं किया जा सकता। इस इंसानी जज्बे को अपने दिलो–दिमाग में उतारने की जगह कुछ कट्टरपंथियों द्वारा इस्लाम को क्रूर और दयाहीन नकाब ओढ़ा दिया गया है। यह कुछ तो अज्ञानतावश है और कुछ सियासी शतरंज की चालों के तहत।

आम मुसलमान साधारणतः कट्टरपंथी नहीं होता। यद्यपि यह सच है कि भयवश या मजबूरीवश या अज्ञानतावश वह कट्टरपंथियों के पीछे खड़ा हो जाता है।

हिन्दू धर्म पुस्तक आधारित धर्म नहीं है इसलिए कट्टरपंथी मूर्खता की गुंजाइश कम होती है। किंतु विद्वानों को जितने तार्किक और ज्ञानशास्त्रीय आधारों की आवश्यकता होती है, मूर्खों को मूर्खता करने के लिए उसका अंशमात्र भी नहीं चाहिए होता। छिलके, गुठली और सड़ा गला अंश खाने वाले हिन्दू भी हैं।

कट्टरपंथी चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या सिख या ईसाई, अपनी पूजनीय पुस्तक के कुछ अंशों को उद्धत करता है और पूरी पुस्तक के समग्र विचार तथा पुस्तक के रचनाकाल की देश काल की परिस्थितियों को नकार देता है। स्वविवेक का उपयोग उसे धर्म का अनादर प्रतीत होता है।

नवोदय आन्दोलन अंधकार से प्रकाश तथा असत्य से सत्य की ओर जाने वाले पथ पर चलने का प्रयास है। स्वविवेक को जागृत करना तथा सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के मूलमंत्र के आधार पर सही–गलत,

उचित–अनुचित का निर्णय नवोदय का एक आवश्यक ध्येय है। कट्टरपंथी अंधकार को समाप्त कर धर्म के सारतत्व को प्रतिष्ठित करना आज की आवश्यकता है।

आइए, नवोदय के शुभकाल में कट्टरपंथ को समाप्त कर, मनुष्य को जागृत कर, धर्म के सारतत्व को ग्रहण करने के लिए मानव को प्रेरित करें।

एकादशः अध्याय

राजा की प्रशंसा में चारों और प्रशंसागीत गाये जा रहे थे। सभासद, मंत्री, पार्षद, विदूषक, नट्, भाँड, ब्राम्हण, गुरु, नृतक, वीर, सेनापति, सेठ, मुनीम इत्यादि सभी एक दूसरे से बढ़ कर राजा के वस्त्रों का गुणगान कर रहे थे। इसी समय एक बालक अनायास बोला कि राजा तो नंगा है। बालक के सत्य ने रंग में भंग कर दिया।

यह आव्हान पत्र भी एक बालक का बालसुलभ सत्य है। बालक ना तो विद्वान है और ही अनुभवी। ईश्वर ने सबको दृष्टि दी, बालक को भी दी। कुछ ने अपनी दृष्टि पर स्वार्थ का पर्दा डाला तो कुछ ने महत्वाकांक्षा का और कुछ ने अपने मस्तिष्क को इतना ठूँस ठूँस कर भर लिया कि आँखों से संकेत ग्रहण करने की मस्तिष्क की क्षमता ही समाप्त हो गयी।

कहते है अंधों में काना राजा होता है। कभी ऐसा हुआ करता होगा। आज के उलूक–वराह राज के युग में यदि अंधों में कोई एक आँख वाला पहुँच जाए तो अंधे उसे पत्थर मार–मार कर या तो अंधा बना देंगें या यह घोषणा करने को मजबूर कर देगें कि वह भी अंधा है।

बालक देख रहा है एवं बोल रहा है। इसी कारण राजदरबार के प्रत्येक व्यक्ति के कोप का लक्ष्य है। उनके अहम् और शक्ति के गुब्बारे में बालक ने सत्य की पिन चुभा दी है। उनका कोप स्वाभाविक है। किंतु बालक उनके कोप से अनभिज्ञ है। शायद उसके हाथ के सत्य रूपी पिन में कोई दैविक शक्ति है!

एक बालक का यह उद्घोष किसी भी प्रकार का कोई दावा नहीं करता। ना विद्धता का ना किसी ईश्वरीय शक्ति का। अपनी दृष्टि से जो कुछ बालक ने देखा, उस पर बालक को कोई अहंकार नहीं है फिर भी बालक को पूरे विश्व का आव्हान करने में कोई संकोच भी नहीं है। इस आत्मविश्वास पर बालक स्वयं चकित है।

बालक समझ रहा है कि जैसे मुर्गे की बाँग से सूर्योदय नहीं होता, उसी प्रकार उसके आव्हान से नवोदय नहीं होने वाला। नवोदय तो होना ही है। इतिहास ने उसे जो भूमिका सौंपी है वह कारक नहीं पर महत्वपूर्ण अवश्य है। इसी से बालक पुलकित है और एक बार पुनः आव्हान करता है कि हे गुणीगण, आइए, नवोदय की ओर चलें।